Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2022

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में राजनीतिक सरोकार

भुवनेश कुमार परिहार [1]

[1] **सहायक आचार्य (हिन्दी), राजकीय महाविद्यालय, सांभर लेक, जयपुर (राजस्थान).**

ABSTRACT:

समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने राजनीतिक विसंगतियों, विद्रूपताओं, विषमताओं का विभिन्न आयामों से सटीक अभिव्यक्ति करके आम आदमी पर पड़ने वाले प्रभाव का यथार्थ चित्रण किया। इन ग़ज़लों में राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, भारतीय संसद, जन प्रतिनिधियों के दोहरे चरित्र, सरकारी आर्थिक योजनाओं की असफलता, भूख, शोषण, अत्याचार की सशक्त अभिव्यक्ति है। पूंजीपतियों एवं नेताओं के विलास जीवन, भ्रष्ट नीति, आमजन का शोषण करने का भाव आदि ने समाज को विकृत कर दिया है जिससे समाज में मूल्यहीनता की स्थिति आ गई है। इन्हीं जीवन मूल्यों की पुनस्थापना का प्रयास हिन्दी ग़ज़ल में अभिव्यक्त ळें हिन्दी ग़ज़लकारों ने भ्रष्ट सत्ता एवं स्वार्थी नेताओं की पोल खोलकर रख दी है। इन ग़ज़लकारों ने नेताओं की लोकसेवा बनाम भ्रष्ट नीति, झूठे वादों व आश्वासनों, स्वकल्याण की भावना का सटीक चित्रण किया है। इस भ्रष्ट सियासत में गरीबी के बजाय गरीब ही मिट रहे हैं। इन्होंने शासकों के दोहरे चरित्र को उजागर कर उनसे सावधान रहने की प्रेरणा का स्वर भी अपनी ग़ज़लों में व्यक्त किया।

KEYWORDS:

भारतीय संसद, संसद, चुनाव, सरकार, विलासी जीवन, भ्रष्ट नीति, आधुनिक भावबोध, समसामयिक संघर्ष चेतना, आम आदमी, चारित्रिक पतन, भ्रष्ट शासन व्यवस्था, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, न्याय, समानता, बन्धुत्व, स्वार्थ, अनाचार, पाखण्ड, शोषण वेदना, गरीबी, बेकारी, चेतना, संघर्ष, नैतिकता.

प्रस्तावना :

"काव्य की चर्चित विधा बन जाएगी।
एक दृढ़ विश्वास है हिन्दी ग़ज़ल।"[1]

समकालीन परिदृश्य में हिन्दी ग़ज़ल काव्य की प्रसिद्ध एवं चर्चित विधा बन गई है। आधुनिक भावबोध, समसामयिक संघर्ष चेतना, आम आदमी से लेकर विशेष तक के व्यक्ति की संवेदनाओं, युगीन विसंगतियों की अभिव्यक्ति हिन्दी ग़ज़ल में है। हिन्दी ग़ज़ल अपने युग की विसंगतियों, चिंताओं, चुनौतियों, चेतना की यथार्थ अभिव्यक्ति है। ग़ज़लकार माणिक वर्मा ने ग़ज़ल को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, "ग़ज़ल का नाम है उस पके हुए फल का जो पत्थरों की चोट से नहीं, अपनी मर्जी से अपने आप टपकता है। व्यक्ति मन के आईने में अपने प्रतिबिंब से लड़ता है, उसकी यह लड़ाई जिन्दगी को और बेहतर बनाने के लिए मन के आईने से निकलकर समाज के आंगन में उतर पड़ती है। तब इस लड़ाई के सामने होते है राजनीतिक षडयंत्र, सामाजिक अनुत्तरदायित्व, रूढ़ियों की बेड़ियाँ और असमानता के आर्थिक शोषण के वाण। इन स्थितियों में व्यक्ति की यह लड़ाई मुखर होकर ग़ज़ल में रूपायित हो जाती है।"[2]

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में युगीन विद्रूपताओं के साथ आशावादी दृष्टिकोण अभिव्यक्त है ताकि समाज एवं देश का नव–निर्माण हो सके। हिन्दी ग़ज़लकारों ने राजनीतिक परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, समस्याओं का युग सापेक्षता के अनुसार यथार्थ चित्रण किया है। इन्होंने राजनीति के बदलते स्वरूप, लोकतंत्र, संसद में चल रही अनैतिकता, राजनेताओं के चारित्रिक पतन, भ्रष्ट शासन व्यवस्था आदि को व्यक्त करते हुए समाज में मानवता का स्थापना का प्रयास किया है।

भारतीय राजनीति ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया है। इस राजनीति में समय के अनुसार विभिन्न बदलाव आये है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना अधिक मुखर हुई है, क्योंकि इन ग़ज़लों में राजनीतिक जीवन की विद्रूपताओं एवं नेताओं के दोहरे चरित्र का व्यंग्यात्मक यथार्थ चित्रण है। वर्तमान में भारतीय राजनीति विभिन्न विसंगतियों से घिर गयी है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने राजनैतिक दलों के दोषों, दल–बदल, गुटबाजी, भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार, शोषण, काला धन, सांप्रदायिकता, गुंडागर्दी, मोहभंग, राजनैतिक मूल्यों का पतन, अवसरवादी नेता, नेताओं का विलासी जीवन, अनैतिकता, स्वार्थ एवं स्वकल्याण, संसद की गरिमा पर प्रश्न चिन्ह, वर्तमान चुनाव प्रक्रिया, लोकतंत्र का हनन आदि राजनीतिक विसंगतियों एवं विकृतियों से रूबरू करवाते हुए उसमें सुधार की आशा अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त की है।

हिन्दी ग़ज़लें भारतीय राजनीति एवं शासन के समसामयिक परिवेश का यथार्थ दस्तावेज है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने भारतीय लोकतंत्र, संसद, चुनाव प्रक्रिया की विकृतियों को उजागर करते हुए भ्रष्ट नेताओं का बड़ी बेबाकी से चित्रण किया। इन्होंने जनता के राजनीतिक शोषण को यथार्थ अभिव्यक्ति देते हुए जनता को जागरूक करने का प्रयास किया है। ग़ज़लकार अदम गोंडवी ने भारतीय संसद की विकृतियों का सटीक चित्रण अपनी ग़ज़लों में किया है। संसद में रिश्वतखोरी या धन का दुरूपयोग आम बात है। आर्थिक सक्षमता के सहारे आप सरकार बना या गिरा सकते है। इसी प्रसंगवश इनकी ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"पैसे से आप चाहें तो सरकार गिरा दें
संसद बदल गई है यहां की नख़ाश में"[3]

इन्होंने संसद में जन–प्रतिनिधियों का आचरण, व्यवहार, भाषा पर व्यंग्य किया है। आज के सांसद एक–दूसरे को शांतिपूर्वक सुनने के बजाय हल्ला करते है। मारपीट एवं गालियाँ भी इनके चरित्र का हिस्सा है। ये कभी संसद में अश्लील वीड़ियों देखते हुए पकड़े जाते है। इन्होंने संसद की गरिमा पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है –

"जल रहा है देश ये बहला रही है कौम को
किस तरह अश्लील है संसद की भाषा देखिए"[4]

भारतीय सांसदों की इसी प्रवृत्ति को 'काका हाथरसी' ने हास्यपरक ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उन्होंने परिवार से लेकर संसद तक के यथार्थ स्वरूप का चित्रण कुशलता से किया। उन्होंने संसद में गाली–गलौच, मारपीट, जुतों का आदान–प्रदान पर व्यंग्यपूर्ण शेर प्रस्तुत किया –

वो संसद आज की तहज़ीब में संसद नहीं जिसमें,
न चप्पल है, न जूता है, न थप्पड़ है, न गाली है।"[5]

ग़ज़लकार अशोक अंजुम ने संसद पर निशाना साधते हुए सियासत के घिनौने स्वरूप का यथार्थ चित्रण किया। उन्होंने नेपथ्य के पीछे छिपे संसद एवं शासन के स्वरूप को सार्वजनिक किया –

"सदन में कैसे नज़ारे है मारा–मारी के,
अभी तो देखिए क्या क्या दिखाई देता है।
ये सियासत के रास्ते बड़े घिनौने है,
हटा के देख जो पर्दा दिखाई देता है।"[6]

वर्तमान समय में सांसद जनता की समस्याओं पर चर्चा के बजाय संसद मे फिजुल की बैठकों में व्यस्त रहते है। ग़ज़लकार रामकुमार कृषक ने इन्हीं अनावश्यक बैठकों एवं सत्र का चित्रण अपनी ग़ज़लों में किया है। वे कहते हैं–

"मुल्तवी कल पर फिर हुई आज की संसद
बैठकों में व्यस्त अपने राज की संसद

पंचशाला ने हमारा एक दिन केवल

ताकनी फिर नित नये अंदाज की संसद''[7]

भारतीय लोकतंत्र में संसद प्रमुख है क्योंकि वहाँ पर देश की समस्याओं एवं निराकरण पर विचार विमर्श होता है। लेकिन नेताओं ने भी संसद को भ्रष्टाचार का केन्द्र बना दिया है। ये लोग अपने स्वार्थ एवं मुनाफे के लिए भारतीय लोकतंत्र का अपने तरीके से उपभोग कर रहे है। ये देश की सेवा के नाम पर वोट मांगते है लेकिन अपने स्वार्थ के लिए भ्रष्ट नेतागण देश को भी बेच देते है। ग़ज़लकार सौरतन आजाद ने अपनी ग़ज़लों में ऐसे भ्रष्ट नेताओं को बेनकाब किया है –

''जमीं बेच देंगे ये गगन बेच देंगे

सियासत के सौदागर वतन बेच देंगे''[8]

ग़ज़लकार बेकल उत्साही ने राजनीतिकों द्वारा फैलायी जा रही सांप्रदायिकता की कड़ी निंदा की है। इनके अनुसार, नेतागण पद या सत्ता के लिए धार्मिक सौहार्द्र समाप्त कर दंगे भी करवाते है। मूर्ख जनता इनके बहकावें में आ जाती है एवं धर्म के नाम पर वतन जलता रहता है –

कुछ सियासत का करम था, कुछ थी अपनी भूल–चूक

अपने हाथों अपने घर का बांगपन जलता रहा

हम कहीं हिन्दू कहीं मुस्लिम बने बैठे रहे

धर्म की चौपाल पर सारा वतन जलता रहा''[9]

सांप्रदायिकता के नाम पर जनता का शोषण करने वाले नेतागण धर्म के चूल्हे पर अपने स्वार्थ की रोटी सेंकते है। ये वोट की खातिर जनतंत्रीय मूल्यों का त्याग कर देते है। ग़ज़लकार परशुराम शुक्ल ने इन्हें 'जोंक' की उपमा दी है और आम जनता को इनसे सावधान रहने को कहा है –

''हमको लेना क्या है हो काबा कही काशी कहीं

रोटियाँ नेता पकाते और सब खामोश है।

चूसते है लहू जनता का हमेशा, जोंक से

एश करते जिन्दगी भर और हम खामोश है।''[10]

ग़ज़लकार बालस्वरूप राही ने अपनी ग़ज़लों में प्रजातंत्र के विकृत स्वरूप को प्रकट किया है। इन्होंने बताया कि आजकल के नेताओं को सुर्खियों में रहना पसंद है, इसलिए ये जुलुस, सभा करते रहते है। इनको जनता की समस्याओं से कोई लेना–देना नहीं है। इनकी ग़ज़ल दृष्टव्य है –

''जो जुलुसों को साथ लाए है

सुर्खियों में वहीं नहाए हैं।''[11]

भारतीय चुनाव प्रक्रिया में सभा, जुलुस का विशेष महत्व है। जन–प्रतिनिधि चुनाव में प्रचार के लिए इनका सहारा लेता है। भारत की चुनाव पद्धति खर्चीली तो है ही, नेतागण भी चुनाव में खूब रूपया पैसा खर्च करते है। आज के संदर्भ में चुनाव हथकण्डों के प्रदर्शन का पर्याय बन गया है। ग़ज़लकार बेधड़क बनारसी का निम्न शेर सटीक एवं सौद्देश्य बन पड़ा है –

''लीडर स्वच्छन्द हो गए,

कौवे निष्पंद हो गए।

ऐसे–ऐसे उम्मीदवार है,

वोटर मतिमंद हो गए।

जीर्ण–शीर्ण लोकतंत्र के,

इलेक्शन पैबन्द हो गए।''[12]

डॉ. कुंअर बैचेन ने चुनाव की विसंगतियों को व्यक्त करने के साथ–साथ कार्यकर्ताओं की स्थिति अपनी ग़ज़लों में प्रकट की है। अपने प्रिय नेता के लिए चुनाव के दौरान जोर–शोर से नारे लगाने वाला कार्यकर्ता नेताजी की कृपादृष्टि गिरते ही स्वयं औंधे मुंह गिरता है –

''नारों की सीढ़ियों को लगाकर चढ़े जो लोग

होकर उन्हीं की चोट से बहरे, उतर गए।''[13]

ऐसा नेता चुनाव जीतने के लिए करोड़ों रूपए की हेर–फेर करते है, वोट के लिए पैसा एवं शराब बांटते है। ग़ज़लकार चन्द्रसेन विराट के अनुसार, ऐसे नेता अपने पक्ष में निर्णय लाने के हर संभव प्रयास करते है। ये मूल मुद्दों से भटकाकर जनता को गुमराह करते है। इनकी ग़ज़ल दृष्टव्य है –

''मूल मुद्दों से हटाकर ध्यान सबका

सत्य का हर तथ्य टाला जा रहा है

पक्ष में निर्णय लगाने के लिए ही

कुर्सियों पर जोर डाला जा रहा है''[14]

ग़ज़लकार जहीर कुरैशी ने सरकार एवं नेताओं की स्वार्थी प्रवृति पर व्यंग्य किया है। भारतीय संविधान नागरिकों को उनके अधिकार देता है लेकिन जब उनका हनन होता है तो सरकारें चुप रहती है। विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि सरकार के खिलाफ बोले तो आप देशद्रोही हो जाते है। इनकी ग़ज़ल है –

''संविधान की भी रक्षा नहीं कर पाई जो

मूकदर्शक बनी सरकार से डर लगता है।''[15]

ग़ज़लकार हरेराम समीप ने सरकार एवं व्यापार के संबंधों को व्यक्त करती हुई ग़ज़लें लिखी है। ये ग़ज़लें राजनीतिक जन चेतना को प्रभावित करने में सक्षम है। इनके अनुसार नेताओं को मोटा चंदा या पैसा देने वाले उद्योगपति, व्यवसायी ही इनकी सरकार चलाते है। नेता नाम मात्र भर का होता है, उसके पीछे व्यापारी ही राजनीतिक खेल खेलते है। यह राजनीति दुकानदारी के समान ही है –

''राजनीति कभी रही होगी

आजकल ये दुकानदारी है

मुख्यमंत्री वो नाम भर का है

इस मदारी का भी मदारी है।''[16]

हिन्दी ग़ज़लकारों ने भारतीय लोकतंत्र, संसद, चुनाव, सरकार एवं प्रशासन पर व्यंग्यपूर्ण ग़ज़लें प्रस्तुत की है। ग़ज़ल सम्राट दुष्यन्त कुमार ने राजनीतिक अव्यवस्था के लिए समसामयिक परिस्थितियों को जिम्मेदार ठहराया। लोकतंत्र जनता का शासन कहलाता है लेकिन इसका उपभोग कुछ लोग ही कर रहे है। इनके अनुसार देश में अब जनता का शासन नहीं रहा –

''हमको पता नहीं था हमें अब पता चला

इस मुल्क में हमारी हुकुमत नहीं रही।''[17]

ग़ज़लकार शिव कुमार अर्चन कहते है कि वर्तमान युग में जनता के अधिकार लुट गए है, लेकिन जनता को पता ही नहीं है। इस देश में एक भी ऐसा जन–प्रतिनिधि नहीं है जो जनता के हक के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सके। इनका यह शेर देखिए –

''इंसानियत, खुलुसों–वफा सब तो लूट गया

अफसोस है कि आपको इसकी खबर नहीं।

निकले थे हम तलाश में इस बात के लिए

है दूध का धुला कोई चेहरा, मगर नहीं।''[18]

ग़ज़लकार चन्द्रसेन विराट ने विकृत शासन व्यवस्था में परिवर्तन का आह्वान किया। ये राजनीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहते है। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में युगीन चेतना प्रकट करते हुए सम्पूर्ण शासन व्यवस्था में परिवर्तन की मांग की –

''पंच या सरपंच बदलने भर से क्या होगा

बदलेगी तो फिर पूरी पंचायत बदलेगी''[19]

भारत प्रदेश में आपातकाल के पश्चात् अवमूल्यित एवं सिद्धान्तविहिन राजनीति का दौर चला। इस राजनीति में सरकार एवं नेताओं के जीवन मूल्य क्या बदले, आमजन की जीवन पद्धति एवं मानसिकता में भी बदलाव आया। वर्तमान युग में राजनीति में मानवता नहीं रही और मानवीय मूल्य भाषणों तक सिमटकर रह गए। सरकार एवं नेताओं ने स्वार्थ सिद्धि के लिए झुठ, फरेब, बेइमानी, भ्रष्टाचार का सहारा लेकर समूचे राजनीतिक परिवेश को दूषित कर दिया है।

ग़ज़लकार अदम गोंडवी ने अपराधी प्रवृत्ति के विधायकों एवं सांसदों का यथार्थ चित्रण किया है। ये राजनीति की वास्तविक स्थिति का आक्रोशमय चित्रण करते है। वे कहते है कि आजकल गुण्डे, अपराधी, डकैत जेल जाने के बजाय संसद में जा रहे है। बहुत सारे नेता अपराधी एवं गुनहगार है लेकिन वे देश की सत्ता संभाल रहे हैं –

''जिनके चेहरे पर लिखी है जेल की ऊँची फसील

रामनामी ओढ़कर संसद के अंदर आ गए।''[20]

इन्होंने इनको 'बापू के बन्दर' की उपमा देकर राजनीतिक परिस्थितियों एवं यथार्थ से हमें रूबरू करवाया है –

'देखना, सुनना व सच कहना जिन्हें आता नहीं
कुर्सियों पर वहीं बापू के बन्दर आ गए।''[21]

ऐसे लोग जब संसद पहुंच गए तो इन्होंने संसद को भी भ्रष्ट कर दिया। नख्खाश में चंद पैसों के लिए घोड़े बिकते है और संसद में नेता। इस विडम्बनापूर्ण स्थिति को अदम गोंडवी ने इस शेर के माध्यम से व्यक्त किया है–

''चन्द सिक्कों के एवज़ ईमान बेचा जा रहा
ये हमारे देश की संसद है या नख्खाश है।''[22]

वर्तमान युग में भारतीय राजनीति के क्षेत्र में मूल्य, दर्शन, सिद्धान्त, नैतिकता का कोई मोल नहीं रहा। स्वतंत्रता पश्चात् नेताओं का नैतिक पतन हो गया। समाज में भौतिकवाद के प्रसार के कारण मूल्यों का ह्रास हो गया। ग़ज़लकार कुबेर दत्त के अनुसार, आज के नेता थोड़े से स्वार्थ के लिए ईमान को बेच रहे है। जनता के जीवन में ऐसे नेता जहर घोलते रहते है। इनके स्वयं के जीवन में जनता कहीं नही है। इनका प्रसिद्ध शेर है –

''ईमान तुल रहा है यहाँ कौड़ियों के मोल
भाषण से ले के बाट तक फैले हुए है आप
जनता का शोर ख़ूब है जनता कहीं नहीं
संसद से राजघाट तक फैले हुए है आप''[23]

ग़ज़लकार निर्मल मिलिन्द ने अपनी ग़ज़लों में राजनीतिक पदों पर विराजमाल नेताओं को लुटेरे की संज्ञा दी है। ये कुर्सी से चिपके हुए नेता जनसेवा का दिखावा करके जनता को लूटते है। इनका चरित्र कुर्सी या पद मिलते ही बदल जाता है। जो नेता चुनाव के दिनों में छुआरे थे वे जीतने के पश्चात् अंगुर बन गए –

''कुर्सियां मिल गई और वायदे काफ़ूर हुए
हमारे हाथ के तोते पकड़ से दूर हुए
कमाल कर गयी आ करके यहां जादूगरी
जो छुआरे थे चार दिनों में अंगुर हुए'' [24]

जनप्रतिनिधिगण के चुनाव जीतने के पश्चात् स्वयं के साथ ही उनके जीवन मूल्य भी बदल जाते है। वे बाहरी दिखावें से जन सेवा का दावा करते है लेकिन अन्दर से स्वार्थ से पूरित होते है। वे देश एवं जनता की सेवा के बजाय संसार के समस्त प्रपंचों में ही व्यस्त रहते है –

''खेमेबाजी, गुटबन्दी, सिद्धान्तों की दीवारें
सभा, तालियाँ, भाषण, रैली, उछले जैसे नारे लोग।
सभ्य सुसंस्कृत, क्षमावान जो हमको दिखते ऊपर से
धैर्य त्याग कर बन जाते है वे ही अंगारे लोग।''[25]

भारतीय नेताओं ने सत्ता एवं पद लिप्सा के लिए जीवन मूल्य ही बदल डाले। ग़ज़लकार मधुप शर्मा कहते है कि मतदाता ने जिस जन–प्रतिनिधि को जीताकर सांसद बनाया वह सत्ता एवं पद के लिए दूसरी राजनैतिक पार्टी में चला जाता है। वह मतदाता से धोखा करके पद के लिए बिक जाता है और मतदाता स्वयं को ठगा सा महसूस करता है –

''हितैषी कोई भी तेरा नहीं है सारे जलसें में
ये अवसरवाद के नारे है, कुर्सी की लड़ाई है।
दिया मत और मतदाता ने समझा बन गया संसद
मगर सांसद बिके फिर से, खुली बोली लगाई है।
हमारे मत की कीमत क्या रही, हैरान है मतदाता
सरासर यह तो धोखा है, सरासर यह ठगाई है।''[26]

ग़ज़लकार जहीर कुरैशी ने प्रजातंत्र की विद्रूपताओं की ओर संकेत करते हुए मानवीय मूल्यों के ह्रास पर गहरी चिंता व्यक्त की है। इस भ्रष्ट तंत्र में मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है एवं सत्ता के दलाल हँस रहे है। इनकी ग़ज़ल दृष्टव्य है –

''इस प्रजातंत्र की व्यवस्था में
तंत्र की ढ़ील–ढ़ाल मत पूछो
मूल्य इतने गिरे 'मनुजता' के
हँस रहा था दलाल मत पूछो।''[27]

इन्होंने अपनी गजलों में हिंसा एवं नफरत की राजनीति का तीव्र विरोध किया। वर्तमान में राजनीति में मानवीय मूल्यों, सिद्धान्तों नैतिकता का स्थान स्वार्थ, भ्रष्टाचार एवं व्यक्तिवाद ने ले लिया जिसके फलस्वरूप आपसी स्नेह, सद्भावना समाप्त हो गए –

''नफरत की राजनीति से पैदा हुई करार
सद्भावना की देवी का संहार कर गई''[28]

ग़ज़लकार पारस नाथ चन्दानी ने अपनी ग़ज़लों में नेताओं की स्वार्थी प्रवृति पर व्यंग्य किया है। ये कहते है कि वर्तमान राजनीति में जनता के प्रति ईमानदारी, सेवा एवं वफादारी का अभाव है –

''वही बस सियासत में शामिल नहीं है
जफ़ा जिसकी आदत में शामिल नहीं है''[29]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय राजनीति में नेताओं के साथ मतदाता के भी मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है। जहाँ स्वार्थी एवं मतलबी नेता ईश्वर को भी चुनावी दाँव पर लगा रहे है वहीं मतदाता पैसे या शराब के लिए अपना जिस्म और आत्मा बेच रहे है। इसी संदर्भ में रामगोपाल भारतीय का यह शेर कितना सटीक है –

''जिस्म बिकता, रूह बिकती, वोट की खातिर यहाँ
दाँव पर जो लग रहे है पीर–पैगम्बर भी है''[30]

आज के नेताओं का ईमान एवं धर्म पैसा ही है। इनके राजनीतिक मूल्य झूठ, फरेब, बेईमानी, आडम्बर है जिनके सहारे ये सत्ता प्राप्त करते है। ये नेतागण सच्चाई एवं ईमानदारी के बजाय छल–कपट की राजनीति करते है। ग़ज़लकार चन्द्रसेन विराट ने नेताओं के दोहरे चरित्र एवं विश्वासघाती प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए जनता को इनकी असली मुखौटा दिखाया है। आम आदमी राजनीति का मोहरा मात्र है। नेताओं की कथनी एवं करनी में काफी अंतर है, एक तरफ तो वो देश का नेतृत्व करते है एवं दूसरी और .....

''नेतृत्व कर रहे हैं, उनकी बड़ी कृपा है
वे देश चर रहे हैं, उनकी बड़ी कृपा है
वे सात पुश्त खायें, यह सोचकर स्वयं का
भण्डार भर रहे हैं, उनकी बड़ी कृपा है
है पैर कब्र में पर छुटती नहीं सियासत
मरकर न मर रहे है, उनकी बड़ी कृपा है''[31]

इस प्रकार हिन्दी ग़ज़लकारों ने आज की राजनीति में सरकारों, नेताओं, मतदाताओं के बदलतें जीवन मूल्यों एवं नैतिक पतन पर व्यंग्यपूर्ण ग़ज़लें लिखी है। बदलते भारतीय परिवेश में न्याय, समानता, बन्धुत्व, एकता का पाठ पढ़ाने वाले नेताओं के जीवन मूल्य अब स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अनाचार, पाखण्ड, शोषण आदि हो गए है जिसकी सशक्त एवं सार्थक अभिव्यक्ति हिन्दी ग़ज़ल में है। अतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने भारतीय राजनीति में व्याप्त विषमताओं, विद्रूपताओं तथा विसंगतियों का यथार्थ चित्रण करते हुए मानवीय जीवन मूल्यों से अभिप्रेत शोषणमुक्त समाज की स्थापना का सशक्त एवं सार्थक प्रयास अपनी ग़ज़लों में किया है।

REFERENCES

1. नीरज : हिन्दी के लोकप्रिय ग़ज़लकार, हिन्द पॉकेट बुक्स, जोरबाग लेन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–129

2. गौरीनाथ : हिन्दी की चुनिन्दा ग़ज़लें, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश, पृष्ठ संख्या–76

3. अदम गोंडवी : समय से मुठभेड़, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–70

4. वहीं : पृसं. 36

5. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना : हिन्दी ग़ज़ल : उद्भव और विकास, सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–168

6. डॉ. सरदार मुजावर : हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–120

7. रामकुमार कृषक : नीम की पत्तियां, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–49

8. सौरतन आजाद : दस्तक स्वप्रकाशित, संस्करण – 1998, पृष्ठ संख्या–45

9. बेकल उत्साही : धरती सदा सुहागिन, पराग प्रकाशन, मैहरोली, नई दिल्ली – 110030, पृष्ठ संख्या–172

10. दीक्षित दनकौरी : ग़ज़ल : दुष्यन्त के बाद (भाग–1), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–154

11. बालस्वरूप शाही : राही को समझाए कौन, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–63

12. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना : हिन्दी ग़ज़ल : उद्‌भव और विकास, सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–171

13. कुंअर बैचेन : आंधियों धीरे चलो, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–100

14. मधु खर्राटे : चन्द्रसेन विराट की प्रतिनिधि हिन्दी ग़ज़लें, विद्या प्रकाशन, गुजैनी, कानपुर, पृष्ठ संख्या–44

15. गौरीनाथ : हिन्दी की चुनिन्दा ग़ज़लें, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश, पृष्ठ संख्या–47

16. वहीं : पृष्ठ संख्या–69

17. दुष्यन्त कुमार : साये में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–18

18. शिवकुमार अर्चन : ग़ज़ल क्या कहे कोई, नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–35

19. चन्द्रसेन विराट : न्याय कर मेरे समय, समांतर प्रकाशन, शुजालपुर, मध्य प्रदेश, पृष्ठ संख्या–98

20. अदम गोंडवी : समय से मुठभेड़, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–31

21. वहीं : पृष्ठ संख्या–31

22. वहीं : पृष्ठ संख्या–87

23. रवीन्द्र कालिया : हिन्दी की बेहतरीन ग़ज़लें, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लोदी रोड़, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–43

24. दीक्षित दनकौरी : दीक्षित दनकौरी

25. वहीं : पृष्ठ संख्या–135

26. मधुप शर्मा : आज मेरी आंख कल सी नम नहीं है, भास्कर पब्लिकेशन्स, कानपुर, पृष्ठ संख्या–18

27. जहीर कुरैशी : चांदनी का दुख, पराग प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली, पृष्ठ संख्या–62

28. डॉ. दरवेश भारती : पुष्प के बहाने (पत्रिका), पुण्य–03, अंक जुलाई–2009, अंशु प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–11

29. वहीं : अंक – अक्टूबर, 2009, पृष्ठ संख्या–21

30. डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल : हिन्दी ग़ज़ल यात्रा (भाग–2), हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, उत्तरप्रदेश, पृष्ठ संख्या–111

31. डॉ. सरदार मुजावर : हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–84